



## 199454 - एक ही दिन में दो बेटों की ओर से अक्रीका करने का हुक्म

### प्रश्न

प्रश्न : गैर जुड़वाँ भाइयों के एक ही दिन में, और सातवें या चौदहवें या इक्कीसवें दिन के अलावा में, अक्रीका करने का क्या हुक्म है ?

### विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह तआला के लिए योग्य है।

हर प्रकसर की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह के लिए योग्य है।

गैर जुड़वाँ भाइयों के एक ही दिन में या अलग-अलग दिनों में अक्रीका करने में कोई आपत्ति की बात नहीं है, अगरचे बेहतर यह है कि हर एक बच्चे का अक्रीका उसकी पैदाइश के सातवें दिन हो। क्योंकि अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है : "हर बच्चा अपने अक्रीका का बंधक होता है, जिसे उसके जन्म के सातवें दिन उसकी ओर से बलिदान किया जायेगा, उसका सिर मूँडा जायेगा और उसका नाम रखा जायेगा।" इसे अबू दाऊद (हदीस संख्या : 2455) ने रिवायत किया है और शैख अल्बानी रहिमहुल्लाह ने "सहीह सुनन अबू दाऊद" में इसे सहीह कहा है।

लेकिन यदि बाप की ओर से किसी निर्धारित कारण से उसके किसी बच्चे की ओर से अक्रीका करने में देरी हो जाए, फिर बाप उस बच्चे की ओर से अक्रीका करना चाहे, और उसके साथ किसी दूसरे बच्चे का भी अक्रीका हो : तो ऐसा करना जायज़ है।

उचित यह है कि हर एक बच्चे का अक्रीका दूसरे बच्चे से अलग हो। यदि जिन बच्चों की ओर से अक्रीका नहीं किया गया है, वे - उदाहरण के तौर पर - दो नर हों, तो उनकी ओर से चार बकरियों का अक्रीका किया जायेगा, हर बच्चे की ओर से दो बकरियाँ। लेकिन यदि वे (एक लड़का और एक लड़की) हों, तो उनकी ओर से ती बकरियों का अक्रीका किया जायेगा ; क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है : "लड़के की ओर से दो बकरियाँ और लड़की की ओर से एक बकरी (अक्रीका) है।" इसे तिर्मिज़ी (हदीस संख्या : 1435) ने रिवायत किया है और शैख अल्बानी रहिमहुल्लाह ने "सहीह सुनन तिर्मिज़ी" में इसे सहीह कहा है।

और यही बात सबसे बेहतर और सबसे अधिक संपूर्ण है।

"इफ्ता की स्थायी समिति के फतावा - प्रथम समूह" (11/441) में आया है कि :



"एक आदमी के कई बेटे पैदा हुए, परंतु उसने उनकी ओर से अक्रीका नहीं किया ; क्योंकि वह गरीबी की हालत में था। वर्षों की एक अवधि के बाद अल्लाह ने उसे अपनी अनुकम्पा से मालदार कर दिया, तो क्या उसके ऊपर अक्रीका अनिवार्य है ?

उत्तर : यदि वस्तुस्थिति वही है जो उल्लेख की गई है, तो उसके लिए उनकी ओर से, हर बेटे की तरफ से दो बकरियाँ, अक्रीका करना धर्म संगत है।"

और अल्लाह तआला ही सबसे अधिक ज्ञान रखता है।